ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 24-29
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

जनवादी कहानी आन्दोलनः एक विष्लेशण

रन्जू चौबे

प्रवक्ता– हिन्दी विभाग, भृगुराशनराय महाविद्यालय, खैराबनुआ, गौरीबाजार, देवरिया, (उ0प्र0) भारत

Received- 25.04. 2019, Revised- 06.05. 2019, Accepted - 12.05.2019 E-mail: niojing@gmail.com

सारांश : **सन् 70 तक आते आते लोगों के सामने आजादी, व्यवस्था और सत्ता की तस्वीर स्पष्ट हो चुकी थी। हमें यह मालूम हो गया था कि आजादी का लाभ धनी लोगों के अलावा दूसरे नही ले सकते। उत्पादन में मुख्य भागीदार किसान और मजदूर उन्ही वस्तुओं के उपभोग से वंचित होते रहे जिनको वे अपनी मेहनत मजदूरी से तैयार करते थे। हमारी अपनी कही जाने वाली सरकार का पक्ष भी स्पष्ट हो गया था। वह पूजीपति, सामंती वर्ग के हित के लिए काम कर ही रही थी, साथ ही हमारे बीच से चुनकर गए नेता या तथाकथित देशभक्तों ने उस वर्ग के साथ कुछ टुकड़ों पर समझौता कर लिया। जनता को अपने वर्ग के लोगों ने भी धोखा दिया। व्यवस्था ने जीवन के हर क्षेत्र में दखल देकर मानवीय भावनाओं को विकृत करना शुरु किया।**

कुंजी शब्द – मानवीय भावना, उत्पादन, विकृत, कूत्सित, असहिष्णुता, दहशत, शिल्प, सामंती वर्ग, सारिका।

इस सबका असर साहित्य–कहानी साहित्य पर भी पड़ा। नयी कहानी तक लेखक जहॉ असमंजस और अनिर्णय की स्थिति में था या उसके दिमाग में कही न कहीं एक उम्मीद जीवित बची थी, सातवें दशक तक लेखकों का पूर्ण रुप से मोह भंग हो गया। कहानियों में एक नाराजगी और असहमति का स्वर गूॅजने लगा। यदुनाथ सिंह के शब्दों में, दूधनाथ सिंह, ज्ञानरंजन, काशीनाथ सिंह, आदि ने अपनी कहानियों में व्यवस्था द्वारा विकृत बना दिये गये मानवीय संबंधों और स्थितियों की कूत्सित वास्तविकता को बेनकाब करते हुए तीव्र असहिष्णुता और असहमति जाहिर की और निर्भय भाषिक संरचना तथा व्यंग्य द्वारा दहशत पैदा करने वाले रुप में उन्हे प्रस्तुत किया। उनकी कहानियों में संबंधों तथा स्थितियों की अमानवीयता तथा वीभत्सता का बेझिझक साक्षात्कार तथा उनके प्रति असहिष्णुता और असहमति है, उनके बीच खुदके टूट और ध्वस्त हो जाने की तत्परता है लेकिन उन संबंधो तथा स्थितियों को नेस्तानाबूद करके नए ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, समय और परिवेश की परिकल्पना और निर्माण की दिशा में कोई सन्नधता और क्रियाभिमुखता नही है।1

उक्त दौर के कहानीकारों ने भोगे हुए यथार्थ और लेखकीय ईमानदारी पर अपने को तो केन्द्रित किया लेकिन लेखकीय जिम्मेदारी का निर्वाह करने का जोखिम नही उठा सके। मध्यमवर्गीय आवश्यकताओं और सुविधाओं में भटके हुए ये लेखक अपने लेखन में व्यवस्था का तो विरोध करते रहे, लेकिन इनके विरोध में वह धार नहीं रह गई थी, जिसकी इनसे अपेक्षा थी। काशीनाथ सिंह अलबत्ता इसके अपवाद रहे। घंटा और बर्हिगमन कहानियों के द्वारा ज्ञानरंजन के विरोध का स्वर भी उॅचा हुआ। वर्तमान व्यवस्था को तोड़कर बाहर आने की तीव्र बेचैनी की अनुभूति उन्होने अवश्य करायी और हमारे मन में यह उम्मीद भी जगी कि भविष्य में कुछ और सार्थक रचनाओं के द्वारा कुछ दिशा निर्धारित होगी, लेकिन लेखको ने काहानी लिखना ही बंद कर दिया। कहानी के क्षेत्र में कुछ नवीनता दिखानी ही थी। परिणामस्वरुप कुछ नए लेखकों को अपने साथ लेकर कमलेश्वर ने सन् 74–75 के आस पास एक नया कहानी आन्दोलन चलाया, जिसे समांतर कहानी नाम दिया गया । इनलेखकों के पास कोई खास रचनात्मक क्षमता नहीं थी। इनके अगुआ कमलेश्वर अपनी श्रेष्ठ रचनात्मक क्षमता का परिचय नही कहानी आन्दोलन के दौर में दे चुके थे। फिर भी कुछ नया करने और चर्चा में बने रहने के लिए उनहोने 'सारिका' कहानी पत्रिका के माध्यम से समान्तर कहानी के नाम से आम आदमी के आस पास की कहानियॉ प्रस्तुत की। 'समांतर लेखन' को भी उन्होने विश्लेषित करते हुए लेखन पर राजनिति के प्रभाव को स्वीकारा। समांतरता से ही साहित्य की मानवीयता का निर्धारण हो सकता है। वर्तमान में भोग की राजनीति का बोलबाला है। स्वार्थी तत्वों ने आम आदमी की करुणा जो मानवीयता का पयार्य है। का दोहन किया है। कमलेश्वर के अनुसार समांतर कहानियों ने इसी मानवीयता और करुण को उभारकर एक परिवर्तन करने वाली शक्ति के रुप में इनकी पहचान की। वैचारिकता से युक्त इन कहानियों ने समय और उसके यथार्थ को स्वीकार किया।

वैचारिकता और शिल्प की दृष्टि से जो नवीनता 'नयी कहानी' और सातवें दशक की कहानी में दिखाई देती है वैसी कोई विशेष बात समांतर कहानी में नही दिखाई देती जिसे एक कहानी आदोलन का नाम दिया जा सके। नैतिकता का संकट नयी कहानी के दौर से ही शुरु हो गया था। अविश्वास, राजनैतिक और आर्थिक संस्थाओं के भ्रष्टाचार

अनुरूपी लेखक

के परिणामस्वरुप जीवन के हर क्षेत्र में मूल्य हीनता का चित्रण नयी कहानी और सातवें दशक की कहानी में हम देख सकते है। फिर, इन्ही चीजो के नाम पर एक नया कहानी आंदोलन शुरु करने की बात निरर्थक लगती है इससे हिन्दी कहानी के अध्ययन विश्लेषण में बाधा ही पहुँची है।

नक्सलवादी आंदोलन ने हमारे समाज और संस्कृति को भी काफी हद तक प्रभावित किया। साहित्य इससे कैसे अछुता रह सकता था। हिन्दी कविता और कहानी में इससे प्रभावित होकर जनवादी कविता, जनवादी कहानी का आंदोलन ही चल पड़ा। आठवे दशक के हिन्दी साहित्य को हम जनवादी कविता और जनवादी कहानी का दशक कह सकते है। इस दशक की कहानियों के बारे में असगर बजाहत का कहना है कि.....ये कहानियॉ समाज और उसकी समस्याओं की जटिलता को, समकालीन जीवन की गत्यात्मकता को, आर्थिक राजनीतिक शक्तियों के द्वन्द्व से जूझते आदमी की करुणा और उसकी आकांक्षा को ऐतिहासिक विकास क्रम के द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी दृष्टिकोण से परखती और सामने लाती हैं। उनमे न गॉव के प्रति कोई रुमानी झुकाव है और न स्त्री पुरुष संबंधो के प्रति कोई विशेष आग्रह है।2

सातवें दशक के कहानीकारों में ज्ञानरंजन और काशीनाथ सिंह ने कहानी में बदलाव की 'सूचना' दे दी थी। क्योकि सन 1967 के बसंत में नक्सलबाड़ी का जो आन्दोलन हुआ था वह वैचारिक स्तर पर देश के बुद्धिजीवियो, रचनाकारो से एक परिवर्तन की मॉग कर रहा था। सच्चा रचनाकार वह होता है जो अपने युग के परिवर्तन को अपनी रचनाओं के माध्यम से गति दे। घंटा और बर्हिगमन जैसी महत्वपूर्ण कहानियॉ लिखकर ज्ञानरंजन ने अपने रचनागत परिवर्तन की पहचान तो अवश्य करा दी, लेकिन यही काफी नहीं था। कहानी रचना से ही विराम लेकर ज्ञानरंजन ने जैसे पाठकों का मोह भंग किया। फिर भी, उक्त दोनो कहानियॉ आठवें दशक के रचनाकारों के लिए उदाहरण थी।

नक्सलबाड़ी या नक्सलवादी आंदोलन से सीधा से सीधा प्रभाव ग्रहणकर लिखी जाने वाली काशीनाथ सिंह की कहानी सुधी घोषाल जनवादी कहानी आंदोलन की पहली कहानी है। इसमें मिल के प्रबंधक और मजदूर के बीच संघर्ष को स्पष्ट किया गया है। मजदूर वर्ग की एकता कितनी ताकतवर होती है कि सिंगरेनी के मजदूरों के खून का बदला रानीगंज के जदूर लेते है ठीक उसी प्रकार जैसे–इटली के मजदूरों के खून का बदला इंग्लैण्ड के मजदूरों ने सेनापति बूचर से लिया था। इसी ऐतिहासिक घटना को इस कहानी का आधार बनाया गया है। कहानी नायक है सुधीर घोषाल, जो अपने मजदूर भाइयें की हत्या का बदला लेने के लिए प्रशासक के घर में रसोइया का काम कर लेता है। उसका एक ही मकसद है अपने मजदूर भाईयो के खून का प्रशासक से बदला लेना। वह बार–बार कहता है हम जिन्दा नई छोड़ेगा, इसको जम जाने नई देगा। तुम बोल नही सकता कि ई खून के माफिक हाय, कतल के माफिक हाय। आन्दोनल नई। ऐसा आमरा साथी लोग भी बोलेगा। बाकी हम विप्लव की प्रतीक्खा नेई करेगा। किसी रोज ताड़ाताड़ी इहां से चला जाएगा। हम फॉसी पड़ जाएगा, बाकी छोड़ेगा नेई नई नेई।3

वैसे, मिल के प्रबन्धक की हत्या पर हम भले ही संतोष व्यक्त कर सकते है, लेकिन यह कहानी हमारे सामने एक सवाल जरुर छोड़ जाती है कि क्या इस प्रकार की हत्याएँ सर्वहारा वर्ग की नैतिकता के अनुकूल पड़ती है ? आदमीनाम कहानी संग्रह में संकलित कहानी सुधीर घोषाल में मजदूरों और मिल के प्रबंधको में सीधे संघर्ष का पहली बार जिक्र आया है। पहाड़ी वाली खादान के लेबरो ने जुर्रत की हैं पहली बार जुर्रत की हैं शाम को एक्सीडेंट मे एक लेबर मरा और अब वे जलूस ला रहे है हम उनका कहना नहीं मानेंगे तो वे बाण चलाएगे, बल्लम और गॅड़ासे भांजेगे। 4

यह कहानी मार्क्सवादी विचारधार के प्रति लेखक की प्रतिबद्धता को स्पष्ट करती है । कोरे सिद्धान्त बघारने वाले किस प्रकार समाज में हंसी का पात्र बनते है, इसकी ओर भी यहॉ संकेत है। कहानी का मै जैसे स्वयं लेखक है और बुद्धि जीवी की स्थिति को स्पष्ट करता है।

मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवी के ढुलमुल चरित्र का पर्दाफाश इस कहानी मं ईमानदारी के साथ किया गया है । एक तरफ इमारत के लोग थे जो 'कम्युनिस्ट कहकर मेरी खिल्ली उड़ाते थे और मेरी हर हरकत को संदेह से देखते थे, दूसरी तरफ खदान में काम करने वाले लोग थे जो मुझे प्रशासक के घर और उसके लड़के के संग देख चुके थे। इन दोनों के बीच मैं कहॉ था ? बार–बार यह सवाल मुझे पीट रहा था कि मैं किधर हूँ ? 5

पूरी कहानी से स्पष्ट है कि समाज में परिवर्तन के लिए मार्क्सवाद को जरुरी है व्यवहार में लाना। विक्रम अगर मार्क्सवादी सिद्धान्त का वाहक है तो सुधीर घोषाल उसे व्यवहार में लाने वाला एक मजदूर। लेकिन कहानी के दोनो पात्र क्या पाठकों पर अपना क्रांतिकारी प्रभाव छोड़ने में सफल है ? विक्रम की कमजोरी है मेंडेक्स खाना तो सुधीर घोषाल स्वयं स्वीकार करता है कि लोग उसके काम को उचित नही ठहराएगे।

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

'लाल किले के बाज' में उन लोगों की खबर ली गई है जो कांति के प्रति रोमैटिंक दृष्टिकोण अपनाते है। जादू ऐसा ही पात्र है जो मानकर चलता है कि भारत में क्रांति अब हुई तो तब हुई। मार्क्सवाद के तोतारटन्त वाक्य बोलने वाले और अपने निजी जीवन में सामंती किस्म का आचरण करने वाले तथाकथित नेताओं का प्रतीक है जादू, जो नौकर को अपने बदन में तेल मालिश करवाते हुए वर्ग संघर्ष की शिक्षा देता है। उन्होने तकिया खींचकर सिर थोड़ा उॅचा किया, रुको उॅगलियॉ ऐसे मत तोड़ो। उन्हे ठीक से पुत्काओ। हॉ, इस तरह सहलाकर। नरमी के साथ। तो मैं तो कह रहा था कि ठाकुर साहब का सारा आबा काबा तुम्हारी, तुम जैसे ढेर सारे लोगों की मेहनत पर खड़ा है। तुम्हों पता नहीं चला और तुम्हारी सारी पीढियॉ सारे पुर्वज इस हवेली की दीवारों में चुन दिए गये है। तुम तुम्हारी बुद्धि शरीर, आत्मा सब कुछ दीवारों के भीतर कैद है। जब तक यह नहीं ढहेगा, इन्हे नहीं तोडा जाएगा तक कवह मुक्त नहीं होगा? और इन्हे तोडेगा कौन ? कौन तोड़गा इन्हे ये ही मजबूत हाथ, भारी पंजे कुडाल और फरसे खेत में नही, इसकी नीव पर चलेगे तब। 6 इस काहनी में जाूद के चरित्र का अन्तर्विरोध भले ही स्पष्ट हुआ है, लेकिन यह लेखक का 'मार्क्सवादी' एप्रोच नही कहा जा सकता।

यही नहीं कि शहर में बूढे बाप का एक वक्त गुजारना देवनाथ के लिए पहाड़ हो रहा है, बल्कि गॉव में अपने घर में सगे बेटे के साथ रहते हुए भी 'बाबा' की स्थिति ठीक नहीं रहती। बाबा ने पलके गिराई और सिसकने लगे–'अगहन कातिक से कहता आ रहा था सुदामा से कि चलो, अस्पताल दिखा दो। कोई एक दिन निकालो, बस चले चलो। लेकिन उसे मौका नही। आदमी के जीवन की सबसे अजीबो गरीब स्थिति तब होती है। जब उसका दुखड़ा सुनने वाला कोई नहीं रहता और जो दर्द अपनों से मिलता है। उसे किसी दूसरे के सामने व्यक्त भी नहीं किया जा सकता। अपना रास्ता लो बाबा अपनों से मिले उसी दर्द की कहानी है। यह दर्द बाबा के कैंसर से होने वाले दर्द से कम नहीं क्यों कि कैसर का दर्द तो कभी–कभी जोर पकड़ता है। वह दर्द हमेशा मन को टिसने वाला है। रोज–रोज के जीवन में सुनाई देने वाला है और अति साधारण सा लगने वाला यह वाक्य अपना दुखड़ा राऍ भी तो किसके आगे रोये। कहानी की संवेदना को तिव्र बना देता है।

सदी का सबसे बड़ा आदमी एक रईस और इनकलाबी के बीच संघर्ष की कहानी है। शुरु में तो लगता है कि सदी का सबसे बड़ा आदमी वह रईस ही है, जिसे आते जाते लोगो पर पान की पीक थूकने, उनके गाली, सुनने और उन्हें कुर्ता धोती देने का शौक है। लेकिन लोगों पर थूककर ओर उन्हें कुर्ता धोती देकर क्या वह उन्हें अपमानित नहीं करता ? इस अपमान को न सह सकने की क्षमता अगर किसी में है तो एक रिक्शा खींचने वाले के लड़के सर्वहारा में। वह साहस के साथ शौक साहब का मुकाबला करता है और अन्त में उन्हें परास्त करके ही दम लेता है। यह सामंत वर्ग की पराजय की कहानी है सर्वहारा की विजय में विश्वास इस कहानी का मूल स्वर है। एक अति सामान्य आदमी मार खाते, उठते,गिरते, संभलते लेकिन अंत में पूरी क्षमता के साथ जूझते हुए अपने विरोधी को परास्त करने में सफल होता है, वास्तव में वही सदी का सबसे बड़ा आदमी सिद्ध होता है। डा0 विजयमोहन सिंह के अनुसार काशीनाथ सिंह ने फार्म, क्राट औ सेंसिबिलिटी के स्तर पर कहानी में जिस तरह के फेबुल्स लिए है वह एक तरह से बाटलनेक से गुजर रही हिन्दी कहानी को बाहर निकालने का भी एक जरिया हो सकता है।7

इसी तरह 'पुतला' कहानी में लेखक ने सर्वहारा को अपना नायक बनाया है। चौधरी भीखमदास, हरमू प्रसाद, चौधरी भजनलाल शोषक सामंती वर्ग के प्रतीक है। अपनी झूठी मर्यादा के लिए आज भी सामंती वर्ग सचेष्ट है। किशनू पासी इनके खिलाफ लड़ने वाला एक मजदूर है, जो किसी भी कीमत पर अपने विरोधियों के सामने घुटने नही टेकता। भीखमदास और हरसूप्रसाद के पुतले का जल जल कर नष्ट होना शोषक वर्ग के अन्त का प्रतीक है। यह कहानी मार्क्सवादी विचाराधारा से प्रभावित है, जिसमें लेनिन की मूर्ति का चित्रण है। कोने में एक तिपाई थी, जिस परमिटटी की एक काली मूर्ति रखी हुई थी। यह मूर्ति किसी गंजे आदमी की थी जिसकी ठुडी पर दाढी थी। उसने फौजी टाइप का ओवर कोट पहन रखा था। वह आदमी देखने में ठिगने कद का लगता था। उसका हाथ उपर की ओर, हवा में उठा हुआ था सिजकी मुठ्ी तनी हुई थी। 8

संग्रह की अन्य कहानियों में मौसाजी, मध्यवर्गीय झूट फरेब और दिशा हीनता की ओर संकेत है। दरियायी घोड़ा एक कमजोर कहानी है। 'ज्ञ' जेड, अलिफ, जगतपती और कर्यू में अपनी वर्तमान स्थिति से उबरने की एक बैचैनी है। इसका पात्र हमें अपनी सोच और समझको व्यापक बनाने की प्रेरणा देता है। तुम जिस दुनिया में रहते हो, हमारा उससे क्या और कितना वास्ता है, सोचो ? तुम अपनी फिक्र के दायरे को और बड़ा नहीं कर सकते कि हम भी उसमें शामिल हो सकें ? यह तुम्हारी बहुत पुरानी आदत है। तुम्हे दूसरो के बारे में भी कभी कभी सोचने की उदारता अपनानी चाहिए। 9 यह कहानी हमें अधिक संवेदनशील

बनाती है। बिना संवेदना के हम दूसरों के बारे में नहीं सोच सकते। यह कहानी उन लोगों को एक झटका देती है, जो नितांत व्यक्तिगत जिन्दगी जीते हैं मध्य वर्गीय मानसिकता में जीने वाले आदमी की नियति की ओर संकेत भी इस कहानी में मिल जाताहै। '.....ज्ञ की सारी उम्र अपने पिल्लों की नाक पोंछते, अपनी बीवी को फुसलाते, उसकी पुरानी बीमारी की खिदतगारी करते, घरेलू खर्चो में कटौती, स्कूटर और फ्रिज बटोरने के तरीकों पर सोचते गुजरी है। .....बहुत सारी परेशानियों, कठिनाइयों और ऐसे मसलों पर लगातार सोचने वाला आदमी कई बातो के लिए कुंद हो जाता है। उसकी संवेदनशीलता पर फफूंद जम जाती है। प्रतीकों के माध्यम से वर्तमान राजनीति पर भी यह कहानी चोट करती है। मुख्य रुप से इसका इशारा बीमार सत्ता की ओर है, जिसकी रक्षा के लिए तरह तरह की चालें चली जा रही है। आज जरुरत है कि सत्ता और व्यवस्था की इन चालों को हम समझें।

पूँजी इस युग की मुख्य वस्तु हो गई है। कीचड़' एक ऐसे आदमी की कहानी है जो पैसे के लिए अपनी औरत तक को बेच डालता है। आज का आदमी अपने में इतना सिमटता जा रहा है कि अपने निकटतम संबंधो को उसे ख्याल नहीं रह गया है।क्यो ? कहानी में संबंधो की दोनो स्थितियॉ है। एक ओर भूपेन है जो मॉ के मरने का समाचार सुनकर ही घर जाता है। इसके पहले बीमार मॉ को देखने तक की उसे चिन्ता नहीं। दूसरी ओर कहानी का में मॉ के साथ रहने मे ही आनन्द की अनुभूति करता है। लेकिन उसके मर जाने पर एक अकेलापन उसका पीछा नहीं छोड़ता। पंकज विष्ट ने संबंधो के चित्रण में सातवें दशक के कहानीकारो से प्रेरणा ली है।10

सामान्य से सामान्य और रोजमर्रा की घटनाओं के द्वारा बड़ी बात कह जाने की क्षमता असगर वजाहत में दिखाई पड़ती है। इनकी कहानयिो में राजनीतिक प्रतिबद्धता स्पष्ट है ।दिल्ली पहुॅचना है में वामपंथी विचारधारा, को मूर्त रुप दिया गया है। आज के आदमी के सामने जितनी जटिल जिन्दगी है, उसका इस कहानी में हल्का स्पर्श है। लेखक ने समरूयाओं की गहराई में न जाकर नारे बाजी से ज्यादा काम लिया है। गॉव के किसान विपिन बिहारी शर्मा की अगुवाई में दिल्ली पहुचने के लिए बीस किलोमीटर पैदल चलकर ट्रेन पकड़ते है। जगह न मिलने पर ट्रेन की खिडकी दरवाजे तोड़कर लोग प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बैठकर पुलिस का प्रतिरोध तोड़ते हुए दिल्ली पहुॅच जाते है। दिल्ली पहुॅचना सत्ता पर कब्जा करने का संकेत हैं संगठन और एकता में इतनी शक्ति है। कि हम अपना लक्ष्य पाकर ही रहेगे, यही इस कहानी का मूल स्वर है।

असगर वजाहत ने 'सरगम–कोला' कहानी में आभिजात्य वर्ग की सभ्यता और संस्कृति पर व्यंग्य किया है। भारतीय कला और संस्कृति की आड में भ्रष्ट आचरण करने वाले लोगों को भी यह कहानी बेनकाब करती है–'.....ये साला निकल रहा है 'आर्ट सेंटर' का डायरेक्टर। पेंटिंग बेच बेचकर कोठियॉ खड़ी कर ली। अब सेनीटरी फिटिंग का कारोबार डाल रखा है। यही साले आर्ट कल्चर करते है। क्योकि इनको पब्लिक रिलेशन का काम सबसे अच्छा आता है। पार्टियॉ देते है। एक हाथ से लगाते है, दूसरे से कमाते है। अपनी वाइफ के नाम पर इन्टीरियर डेकोरेशन का ठेका लेता है.....लड़की सप्लाई करने से वोट खरीदने तक के धंधे जानता है। 11 आज भारतीय कला और संस्कृति का जिम्मा उन्हीं लोगो ने ले रखा है जो भ्रष्ट तरीके से पैसा कमाते है। कला संस्कृति को भी इन्होने पैसा कमाने का एक जरिया बना लिया है। जिन लोगो की दिलचस्पी वास्तव में भारतीय कला और संस्कृति में है उन्हे उससे दूर रखा जा रहा है। लेखक ने एक अछुते प्रसंग को अपनी कहानी का कथ्य बनाया है।

नौकरी की व्यवस्था न होन पर आज किस प्रकार बेरोजगार युवा पीढ़ी का गलत इस्तेमाल समाज के अपराधी किस्म के लोग कर रहे इसे असगर वजाहत ने 'मुर्दाबाद' कहानी में दिखाया है। कथ्य में विविधता असगर वजाहत की एक विशेषता है। यह वही लेखक कर सकता है। जिसे जीवन के विविध क्षेत्रों पर ध्यान हो। आज का चुनाव हमारा लोकतंत्र अब दिखावा रह गया है। पैसे और गुण्डे जिसके पास हैं वही आज चुनाव जीत सकता है। इस प्रकार हमारा लोकतंत्र वास्तव में जनता की भागीदारी से वंचित है और केवल उन्हीं लोगों का इस पर कब्जा है जो पूजीपतियों से साठ गॉठ रखे हुए है। क्योकि आजकल के नेताओं को चुनाव लड़ने के लिए पैसा पूँजीपति देते है और बाकी सब काम नेता कर देते है। सिद्धान्त विहीन राजनीति का हमारे यहॉ बोलबाला है। अपराधी प्रवृति के नेता, अफसर, दलाल गरीबों को लूट रहे है। यहॉ की पूरी व्यवस्था भ्रष्ट हो गई है। और जनता भुखमरी में अपना दम तोड रही है। पतवार से पटी दल्लान की छत नीचे झुक आई है। लालटेन की रोशनी में बाबूजी का काला–दुबला पतला चेहरा रजाई के बाहर फटे तकिए पर एक ओर पड़ा होगा। दमें के पुराने मरीज का सीना जिस तरह फूलता पिचकता है वैसे ही बाबूजी का सीना रजाई के नीचे उठ बैठ रहा होगा। गाल की उभरी हुई हडिडयॉ और सिमटी सिकुडी हुई खाल पचास भुख्मारी में बिताए साल।12 कहानी के अंत में उमाशंकर के दिमाग में जो शेम शेम, हाय हाय मुर्दाबाद का स्वर गूँजता रहता है, लगता है जैसे पूरी व्यवस्था, वर्तमान

प्रजातंत्र के लिए ही मुर्दाबाद का स्वर गूंज रहा है। लेखक कहानी में जटिल या घुमावदार शिल्प का सहारा न लेकर बहुत ही सहजता के साथ अपनी बातें कह जाता है।

जनवादी विचारधारा के प्रबल पक्षधर संजीव ने कई ऐसी कहानियॉ लिखी है जिन्हे रचनात्मक उपलब्धि के रुप में देखा जा सकता है। 'अपराध' कहानी पर नक्सलवाद का सीधा प्रभाव है, हालांकि यह एक बुद्धिजीवी के अपराध बोध और पश्चाताप की कहानी बन गई है। इस कहानी में जिस आक्रोश के साथ वर्तमान व्यवस्था पर प्रहार किया गया है, वह ज्यादा महत्पपूर्ण है। लगता है जैसे खुद लेखक भी कहानी की घटनाओं में शामिल हैं देश की न्याय व्यवस्था पर लेखक का कथन सर्वथा प्रासंगिक है याद आते है। उॅची कुर्सी पर बैठे अपने तमाम ताम झााम के वावजूद श्रीहीन जज, सरकारी और मुदई पक्ष के वकीलों के बहसने और विहसने की कलाऍ .....न्याय की प्रत्याशा में आगत ऊबती, मुरझाती भीड़, मिठाइयों की दुकानो पर डकारती और ललकारती हुई नकली गवाहों की टोलियॉ रंडियो के दलालों की तरह आसामी फसाते हुए वकीलो के दलाल ड्राअर खोलकर दो दो रुपयो पर फर्जी मुकदमो की तारीख बढाते पेशकार।13 कचहरी का वेवाक चित्रण संजीव ने अपराध कहानी में किया है। यह दिखाने का उन्होने प्रयास किया है जिस देश की न्याय व्यवस्था झूठ और फरेब तथा दलाली पर आधारित है, उस देश में अन्य क्षेत्रों में क्या हालत होगी।

संजीव ने इस कहानी में शचिन जैसे यादगार पात्र की सृष्टि की है। लडते लडते भले ही वह फॉसी पर चढ जाता है लेकिन सत्ता के सामने झुकता नहीं। शचिन की फासी एक वीर योद्धा के अपने सिद्धान्तो पर अडिग रहने की कहानी कह जाती है। यह फासी हर उस व्यत्ति को वर्तमान व्यवस्था के प्रति आक्रोश पैदा करती है जो इसकी मूल प्रवृति की पहचान कर चुका है। अदालत में शचिन का बयान तो जैसे देश की न्याय व्यवस्था का पोस्टमार्टन ही कर डालता है। मुझे इस पुजीवादी, प्रतिक्रियावादी न्याय व्यवस्था में विश्वास नहीं है। आम जनता भी जिसे न्याय का मन्दिर कहती है वह लुटेरे पंडी और जूताचोरो से भर पडा है। यहॉ आते ही चपरासी, अहलमद, नाजिर पेशकार, कानूनगो से लेकर काला लबादा ओडे वकील और गीता तथा गंगाजल की कसमे खाकर झूठी गवाहियॉ देने वाले गवाह, ये तमाम कुत्ते नोचने खसोटने लगते है उसे। ये लाल थाने, लाल जेलखाने और लाल कचहरियॉ इन पर कितने बेकसूरो का खून पुता है। वकीलो और जजों का काला गाउन न जाने कितने खून के धब्बो को छुपाए हुए है। परिवर्तन के महान रास्ते में एक मुकाम ऐसा भी आऐगा जिस दिन इन्हे अपना चरित्र बदलना होगा, वरना इनकी रोबीली बुलन्दियॉ धूल चाटती नजर आएगी। 14

संजीव जनवादी कहानी आंदोलन के एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर है इनकी हर कहानी वर्ग विरोध को स्पष्ट करती हुई चलती है। इनके पात्रों में जोखिम उठाने की क्षमता है उनके सोच के पीछे एक तर्क है, दर्शन है इनके पात्र जीवन से निराश होने वाले नहीं, बल्कि खतरो का सामना करते हुए एक दृढ सकल्प वाले है आज हमारे यहॉ व्यवस्था को बदलने के लिए जो संघर्ष छिडा हुआ है। संजीव की कहानियॉ उसी संघर्ष को पभाषित करती है डा0 यदुनाथ सिंह का मानना है कि आज का संघर्ष किसी वर्ग, जाति, पार्टी, प्रान्त, भाषा या संस्कृति के दायरो के भीतर न होकर आदमी का सीधे आदमी से है। उन्हे हम आज की कहानी नही कह सकते जो इस दुनिया से दूर सुरक्षित स्थितियों में रहते हुए, बिना जोखिम, बिना पीड़ा के, बिना संकल्प और बिना किसी दर्शन के सिर्फ व्यवसाय के स्तर पर लिखी लिखाई जा रही है। उनके साथ जुडे हुए दावे ऑर घोषणाए न सिर्फ उनकी व्यर्थता और अर्थहीनता को प्रकट करती है। बल्कि उनके लेखन के मूल में निहत स्वार्थे और शडयंत्रों को भी जाहिर करती है। 15

स्वयं प्रकाश अपनी पीढी के कहानीकारो में अगली कतार में आते है। इनके पास एक राजनीतिक समझ है। जिदगी के प्रति गहरा लगाव इनकी कहानियो को जीवन्त बनाए रखता है इन्होने जीवनके द्वन्द्व को अपनी कहानियों मे उतारा है। इनकी कहानियॉ अन्याय, असमानता और शोषण के खिलाफ संघर्ष करने की प्रेरणा देती है जीवन के भोगे हुए यथार्थ को उसी रुप में प्रस्तुत करना स्वयं प्रकाश की अपनी विशेषत है कहानी के सपाट कथ्य शिल्प को अस्वीकार करते हुए इन्होने पूरी व्यवस्थाके विरुद्ध संघर्ष के लिए अपनी रचनाओं को एक हथियार बनाया है। इनके पात्र दृढ इच्छा शक्ति और आत्म विश्वास से भरपूर है। इन्होने ईमानदारी से काम करने वाले, अपने हक के लिए लड़ने वाले पात्रो का पक्ष लिया है। हाल ही में प्रकाशित उनकी एक कहानी है अविनाश मोटू उर्फ एक आम आदमी। टेलीफोन एक्सचेंज में काम करने वाला अविनाश अपने साथियो से इस मायने में अलग है कि वह धोखा देकर पैसा नही लेता। यह ईमानदारी उसके अंदर एक साहस पैदा करती है जो किसी के सामने झुकता नही। उसका मानना है कि 'गोरमेंट पगार देती है, महीने के महीने बाउजी। कोई हाथ पॉव टूट नही गए है जो भीख मॉगने जाये। और..... ...गरीब ? तुम गरीब हो। माफ करना जनाबे सर। गरीब तो गधी होती है। मर्द का बच्चा गरीब हो ही नही सकता। 16 आज के कहानीकारों की कमजोरी की ओर संकेत करते

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

हुए डा0 नामवर सिंह कहते है कि .....'जिन्दगी की सच्चाई के किसी नए पहलू को सामने लाने के लिए जिन्दगी की ज्यादा गहरी पहचान और अंर्तदृष्टि चाहिए। आज उसकी कमी है। .....इधर कहानी पूरी तरह सामाजिक हो गई है और अंतदृष्टि चाहिए। आज उसकी कमी है।.....इधर कहानी पूरी तरह सामाजिक हो गई है और इस हद तक सामाजिक हुई है कि अमानवीय हो उठी है। पर कहानी जहॉ बनती है, वह सामाजिक यथार्थ का चित्रण नही, बल्कि उसमें निहित मानवीय संवेदना है। यथार्थवाद के आग्रह के कारण हम लोग कहानी में वातावरण बनाने के लिए बहुत सी कड़वी अप्रिय भयानक स्थितियों का चित्रण करते है और इस तरह परिवेश तो बड़ा यथार्थ हो जाता है लेकिन कहानी इस परिवेश से तो बनती नहीं है। उस परिवेश में भाग लेने वाला मनुष्य कहॉ टूटता है, कहॉ खड़ा होता है, मार खाता है.....कहॉ लड़ता है, मनुष्य की उस स्थिति में.....या उसके मानवीय तेवर में कहानी होती है. ....कहानी वहॉ बनती है। 17

जनवादी कहानी आंदोलन ने वर्षो बाद गॉव की जिन्दगी को उसक बदले हुए तेवर के साथ प्रस्तुतकिया। गॉव के किसान–मजदूर किस प्रकार अपने हक की लड़ाई तेज कर रहे है और सामंती शोषको के उत्पीड़न का किस प्रकार प्रतिरोध कर हे हैं इन सारी बातों को जनवादी रचनाकारो ने उॅचा स्वर दिया है। उधर कल कारखानों में मजदूर भी अपने विरोधी मिल मालिक और प्रबंधको से लड़ाई लड़ते हुए अपनी एकजुटता बनाए हुए है, उसका चित्रण इन रचनाकारों के यहॉ मिल जाएगा। अलबत्ता यह प्रश्न उठाया गया है कि पहले जैसा प्रेम का चित्रण, करुणा, सहानुभूति जैसे भाव आज की कहानियों से गायब है। फिर भी, किसी ने सही कहा है कि परिवर्तन के लिए थोड़ा अमानवीय होना जरुरी हैं मानव स्वभाव का चित्रण यदिआज की कहानियों में प्रमुखता से हो तो कहानी में स्वाभाविकता आएगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. यदुनाथ सिंह–समकालीन हिन्दी कहानी–प्रकृति और परिदृश्य, पृ0 90–91
2. टगसर वजाहत–अंधेरे से पृ0 5
3. काशीनाथ सिंह – आदमीनामा, पृ0 102
4. वही, पृ0 106
5. वही, पृ0 98
6. वही, पृ0 75
7. सारिका–16–30 अप्रैल 1984, पृ0 61
8. उदयप्रकाश –दरियायी घोड़ा, पृ0 67
9. वही, पृ0 46–47
10. वही–पृ0 47
11. असगर वजाहत–दिल्ली पहुॅचना है पृ0 120
12. वही, पृ0 36
13. संजीव–तीस साल का सफरनामा, पृ0 19
14. संजीव–तीस साल का सफरनामा, पृ0 29
15. डा0 यदुनाथ सिंह समकालीन कहानी– प्रकृति और परिदृश्य
16. हंस सं0 राजेन्द यादव, पृ0 30
17. नामवर सिंह–सारिका , 16–30 अप्रैल 1984

*****